पाठ्य पुस्तक [TEXT BOOK]

* आवश्यकता व महत्व
* गुण
* दोष

Introduction :-

प्राचीन काल में पुस्तकें नही हुआ करती थी। जिसके कारण शिक्षण प्रक्रिया मौखिक हुआ करती थीं। पाठ्य पुस्तकों का प्रचलन उनके निर्माण के क्रम में आता गया और छात्र व शिक्षक दोनों के लिए ज्ञान प्राप्ति का साधन बन गया। शिक्षा जैसी बहुमूल्य प्रक्रिया को पूरा करने के लिए कई साधनों का उपयोग किया जाता है, क्योंकि उनसभी साधनों को सम्मिलित स्वरूप ही शिक्षण (Teaching) है, तथा पाठ्य पुस्तक शिक्षण का उपकरण (Tools of Teaching) है। शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है, अर्थात

शिक्षण प्रक्रिया त्रिभुज के जैसे है। जिसकी एक भुजा शिक्षक, दुसरी शिक्षार्थी/छात्र तथा तीसरी भुजा शिक्षण के साधन हैं।

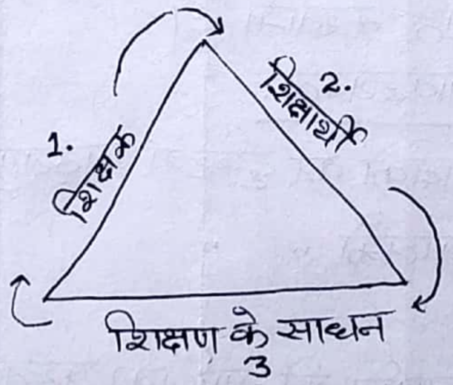

⇒ **शिक्षक** :- छात्रों को कक्षा में अनेक बातें बतानी होती है, छात्र के द्वारा पुछे गये अनेक प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना पड़ता है। इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए शिक्षक के मस्तिष्क में कई स्वाभाविक प्रश्न उठते हैं।
जैसे- वह क्या पढ़ाए ?, कैसे पढ़ाए ? कितना पढ़ाए ? आदि

P.T.O

Scanned with CamScanner

इन प्रश्नों के उत्तर के लिए शिक्षक पाठ्य - पुस्तक का सहारा लेता है।

⇒ **शिक्षार्थी/छात्र :-**

वर्ग में जाने से पहले छात्रों के भी मस्तिष्क में भी कुछ स्वाभाविक प्रश्न होते हैं।

जैसे - वे सीखी गई बातों को कैसे दुहराए ? अधिक से अधिक कैसे समझें ? शिक्षक के उपस्थित न होने पर कैसे पढ़ें ? आदि इन सभी प्रश्नों के उत्तर के लिए पुस्तक छात्रों की सहायता करती है।

⇒ **शिक्षण के साधन :-**

शिक्षण के साधन के रूप में पाठ्यपुस्तक का अहम स्थान है। इसलिए कहा जाता है की पाठ्य पुस्तकें साध्य नहीं है। बल्कि किसी दूसरी वस्तु के लिए साधन है। प्राचीन काल में शिक्षकों को अपनी इच्छा से किसी भी विधि के द्वारा छात्रों को पढ़ाया, रटाया जाता था।

लेकिन आज की शिक्षा छात्रों पर केंद्रित है और मनोविज्ञान का उपयोग कर विधियों को चुना जाता है, छात्रों की रुचि योग्यता, उम्र, मानसिक स्थिति तथा व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखा जाता है। इन सभी कार्यों में आज पाठ्य पुस्तकें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। शिक्षक पाठ्य-पुस्तकों की सहायता से ही वर्ष भर के पाठ्यक्रम को पूरा करता है, क्योंकि आज की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को पाठ्य समाग्री के अच्छे से समझा कर उसे व्यक्त करने की क्षमता को विकसित करवाना है।

* **पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता :-**

A. शिक्षकों की दृष्टि में पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकताए।

B. बालकों " " " " " ।

A.

1. ज्ञानार्जन की साधिका पुस्तक।
2. बालकों की आवश्यकतानुसार शिक्षा देने के लिए।
3. स्तरानुसार शिक्षा के लिए।

Scanned with CamScanner

A.→ 1. ज्ञानार्जन की साधिका पुस्तक :-

ज्ञान का अर्थ है अध्ययन अर्थात् जीवन का अनुभव, जीवन के अनुभवों को चाहे स्वंय ही प्राप्त करके सुनकर या पढ़कर व्यक्ति अपने भविष्य के कार्यों का निर्धारण करता है। इस ज्ञान के संचित कोष का नाम साहित्य है और पुस्तक भी साहित्य का ही एक भाग है। पुस्तक जीवन के संजीव अनुभव की जमा पुंजी है। पुस्तक के माध्यम से देश-विदेश, सभी धर्म, जाति, युग-युगान्तर के अनुभवों से लाभ उठा सकते हैं।

2. बालकों की आवश्यकतानुसार शिक्षा देने के लिए :-

छात्रों या बालकों को सभी पाठ्यवस्तु एक साथ नहीं पढ़ाया जा सकता है, ऐसे स्थिति में अच्छा यह होगा की शिक्षक छात्रों को उतना ही पढ़ाए जितना वह आसानी से समझ जाए। इसके लिए शिक्षक 1 वर्ष में पढ़ाए जाने वाले वस्तु को बालकों की क्षमता के अनुसार इस तरह अलग बाँट लेते हैं, जिससे शिक्षा का उद्देश्य भी पूरा हो जाए और छात्र आसानी से पढ़ाए गये विषय को समझ जाए।

3. स्तरानुसार शिक्षा के लिए :- जो छात्र को अक्षर का ज्ञान नहीं है, वह मात्राओं को नहीं जान पाएगा, न ही वह शब्दों को लिख ही सकता है, और जो शब्द और उसके अर्थों को नहीं समझता वह भाषा एवं ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि छात्रों को उनकी आयु, शैक्षिक स्तर के अनुसार ही आगे की शिक्षा स्वरूप निर्धारित किया जाए, और अलग-अलग वर्ग व आयु के लिए अलग-अलग पाठ्य पुस्तक हो।

B→ बालकों की दृष्टि में पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकताएं

1. अर्जित ज्ञान के स्थायित्व के लिए।
2. स्वाध्याय के लिए।
3. प्रदान की गई शिक्षा में समानता लाने के लिए।

Scanned with CamScanner

B.→ 1. अर्जित ज्ञान के स्थायित्व के लिए :- अमीर खुसरो की एक पहेली जो बड़ी मनोरंजक है। घोड़ा अड़ा क्यों? पान सड़ा क्यों? रोटी जली क्यों? मुँह खड़ी क्यों? सभी का उत्तर एक ही है "फेरा न गया अर्थात् पलटा न गया" स्पष्ट है कि शिक्षक की बताई बातों को बालक चिरफलक (दिमाग में एक जगह) स्थायी नहीं रख सकते, अत: सीखी गई बातों को लम्बी अवधि तक याद रखने के लिए उन्हें बार-बार दुहराना पड़ता है। लेकिन दुहराना इस समय तक संभव नहीं है, जब तक कि पाठ्य पुस्तक न हो अत: शिक्षक पुस्तकों की सहायता से बालकों को जो कुछ भी बताते हैं वह उन्हीं बातों को पुस्तक में पढ़कर अपने ज्ञान को स्थायी बना सकते हैं।

2. स्वाध्याय के लिए :- व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर यह स्पष्ट है कि कक्षा के सभी बालकों के ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता सामान्य या एक ~~समान~~ समान नहीं होती उसकी समझने की गति भी समान नहीं होती बालकों को पाठ्य-अपनी-अपनी गति व क्षमता के अनुसार पढ़ने के लिए पुस्तक की आवश्यकता पड़ती है।

3. प्रदान की गई शिक्षा में समानता लाने के लिए :- शिक्षा के अनेकों उद्देश्य होते हैं, इन उद्देश्य की पूर्ति किस सीमा तक हुई है, यह जानने के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है विभिन्न साधनों पर मूल्यांकन का कार्य एक निश्चित पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक के अभाव में जटिल बन जाता है। जितनी भी पाठशालाएं चल रही है उनमें यदि पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकों की समानता न हो तो शिक्षा की गति, शिक्षण का रूप समान नहीं होगा। इसलिए देश में या राज्य में सुदूर स्थानों पर शिक्षा का स्वरूप समान रखने के लिए भी पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता पड़ती है।

कम शब्दों में कह सकते हैं कि ज्ञानार्जन, ज्ञान के प्रयोग और स्थायित्व, स्वाध्याय (Self Study) के लिए पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner

* पाठ्य पुस्तक की उपयोगिताएँ :-

पाठ्य पुस्तक को हम निम्न - लिखित प्रकार से समझ सकते हैं।

(i) यह शिक्षक और छात्र दोनों का समय बचाती है।

(ii) यह शिक्षक को कक्षा में जाने से पहले पाठ की तैयारी करने का अवसर देती है

(iii) छात्रों को कम खर्च पर सारी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तथ्य तथा सूचनाएँ एक पुस्तक में एकत्रित मिल जाती है, जिससे उन्हें इधर-उधर तलाशने की आवश्यकता नहीं होती है

(iv) इसके माध्यम से छात्र घर पर भी अध्ययन कर सकते हैं, तथा गृहकार्य करने में सहायक सिद्ध होता है।

(v) छात्र को निर्धारित पाठ्यक्रम का ज्ञान पाठ्य पुस्तकों के द्वारा ही होता है वे ज्ञात कर सकते हैं कि वर्षभर में उन्हें कितना पढ़ना है।

(vi) प्राथमिक कक्षाओं में पुस्तकों की अवहेलना किसी सीमा तक की जा सकती है लेकिन उच्च कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों के बिना पढ़ना असंभव सा है।

(vii) पाठ्यपुस्तकों की सहायता से एक साथ अनेक छात्रों को पढ़ाया जा सकता है।

(viii) प्रत्येक शिक्षक मौखिक शिक्षण मे निपुन नहीं होता, सामान्य बुद्धि के अध्यापक के लिए पाठ्य पुस्तक का सहयोग लेना अवश्यक हो जाता है

(ix) शिक्षक द्वारा पढ़ाया गया पाठ छात्र भूल जाते हैं, उनको वह घर पर पुस्तकों की सहायता से पुनः पढ़ कर याद कर सकते हैं, अतः दुहराने के लिए इसकी उपयोगिता और बढ़ जाती है

(x) मौन पठन का अभ्यास पाठ्य पुस्तकों के द्वारा ही किया जाता है। मौन अध्ययन छात्रों को स्वयं अध्ययन करने की प्रेरणा देता है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

* पाठ्य-पुस्तक गुण/लाभ एव दोष/ हानि :-

⇒ गुण :-

(i) शिक्षकों को पाठ्यवस्तु को छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करने में सरलता होती है। क्योंकि लेखक वर्षों के अनुभवों तथा अन्वेषणों के आधार पर लिखते है।

(ii) पाठ्य-पुस्तक के माध्यम से शिक्षकों को पाठ्यक्रम के ढ़ांचे एवं स्वरुप तथा उसकी सीमा का ज्ञान होता है।

(iii) शिक्षक को पाठ्यपुस्तक के माध्यम से अपने शिक्षण कार्य में सहायता मिलती है, क्योंकि पाठ्यपुस्तकों को विभिन्न कक्षाओं के छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार लिखा जाता है।

(iv) अनुभवहीन शिक्षकों को पाठ्यवस्तु को व्यवस्थित करने में सहायता मिलती है।

(v) अभ्यास कार्य तथा गृह कार्य को करने में सहायता मिलती है। छात्रों को पुन: स्मरण तथा पुर्व अवलोकन करने का अवसर मिलता है।

(vi) अनुशासन बनाए रखने में भी पाठ्यपुस्तकों का सहयोग मिलता है।

(vii) पाठ्य-पुस्तक समय नष्ट नही होने देती, खाली समय में पुस्तक के साथ अकेलापन महसुस नही होता है समय का सदउपयोग होता है

⇒ दोष :- यदि पाठ्य पुस्तक के चयन में असावधानी बरती जाती है, तो पाठ्य पुस्तक से निम्नलिखित हानियाँ होगी।

(i) छात्रों का ज्ञान संकुचित हो जाता है, क्योंकि शिक्षक कभी-कभी उतनी बातों को बताते अथवा पढ़ाते है जितनी पुस्तक में लिखी होती है।

(ii) छात्र विषय के विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में रुचि नहीं लेते क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य पाठ्यवस्तु रटकर परीक्षा में पास होना होता है।

(iii) छात्रों को स्वंय खोज एवं अन्वेषण द्वारा सीखने का अवसर नहीं मिलपाता, वे विषय-वस्तु को पहले ही पाठ्य-पुस्तकों में पढ़ लेते हैं एवं उसे ग्रहण कर लेते हैं।

(iv) छात्रों को रटने की बुरी आदत लग जाती है; बिना समझे रट लेते है।

(v) पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से सैद्धांतिक पक्ष पर अधिक जोर दिया जाता है, और व्यवहारिक पक्ष की उपेक्षा की जाती है।

Thanks for reading

Scanned with CamScanner

SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

SESSION – 20-22

COURSE NAME – B.Ed.

SUBJECT - C-08 U-4

TOPIC NAME – पाठ्यपुस्तक आवश्यकता गुण, दोष

DATE - 04-02-22

Scanned with CamScanner